Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July 2024 5(7), 703–707

संस्कृत वाङ्मय में आशावाद

डॉ0 दिव्या[1]

[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृतविभाग, आर्य महिला पी0जी0 कॉलेज, चेतगंज, वाराणसी।

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i7.2024.4320

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

'आशावाद' शब्द लैटिनभाषा के 'ऑप्टिमम' शब्द से आया है। 'आशावाद' (Optimism) उस मानसिक स्थिति को कहते हैं जिसमें व्यक्ति सर्वोत्तम फल के प्रति आशान्वित हो। भारतीय मनीषियों का चिन्तन आशावाद से ओत–प्रोत एवं संस्कृतभाषा में निहित है। संस्कृतभाषा का साहित्य अत्यन्त ही व्यापक, सर्वतोमुखी तथा कल्याणकारक है। अनेक अमूल्य ग्रन्थरत्नों का भण्डार है। ऋग्वैदिककाल से लेकर आज तक सभी प्रकार के साहित्यों का निर्माण संस्कृतभाषा के माध्यम से होता रहा है। वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता तथा अभिज्ञानशाकुन्तल आदि श्रेष्ठ नाटक संस्कृतभाषा में ही लिखे गये हैं, जो समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने का साधन है। सकारात्मक दृष्टिकोण का अभिप्राय आशावाद से है। महर्षि वाल्मीकि – विरचित रामायण लौकिक संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य है। परवर्ती काव्यों का उपजीव्य होने के साथ – साथ वेदों का उपवृहंण करने वाला भी है। वेदों एवं उपनिषदों में निहित गूढ़तत्त्वों को अलंकारों में पिरोकर आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने जन – जन तक पहुँचाया है, इसमें भारतीय उदात्त चेतना का नव्य एवं भव्य रूप के साथ अवतरण हुआ है। रामायण में वर्णित कौटुम्बिक व्यवहार भारतीय समाज का आदर्श एवं आशावाद की भावना से समन्वित है। सभी पात्र आदर्श के प्रतीक एवं प्रेरक हैं। रामायण में राम एक आदर्शपुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र एवं आदर्श राजा के रूप में चित्रित हुए हैं। उनका आचार – विचार एवं व्यवहार सदा से अनुकरणीय रहा है। उनकी पितृभक्ति अद्भूत एवं प्रेरक है –

'आशावाद' शब्द लैटिनभाषा के 'ऑप्टिमम' शब्द से आया है। 'आशावाद' (Optimism) उस मानसिक स्थिति को कहते हैं जिसमें व्यक्ति सर्वोत्तम फल के प्रति आशान्वित हो। भारतीय मनीषियों का चिन्तन आशावाद से ओत–प्रोत एवं संस्कृतभाषा में निहित है। संस्कृतभाषा का साहित्य अत्यन्त ही व्यापक, सर्वतोमुखी तथा कल्याणकारक है। अनेक अमूल्य ग्रन्थरत्नों का भण्डार है। ऋग्वैदिककाल से लेकर आज तक सभी प्रकार के साहित्यों का निर्माण संस्कृतभाषा के माध्यम से होता रहा है। वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता तथा अभिज्ञानशाकुन्तल आदि श्रेष्ठ नाटक संस्कृतभाषा में ही लिखे गये हैं, जो समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने का साधन है। सकारात्मक दृष्टिकोण का अभिप्राय आशावाद से है। महर्षि वाल्मीकि – विरचित रामायण लौकिक संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य है। परवर्ती काव्यों का उपजीव्य होने के साथ – साथ वेदों का उपवृहंण करने वाला भी है। वेदों एवं उपनिषदों में निहित गूढ़तत्त्वों को अलंकारों में पिरोकर आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने जन – जन तक पहुँचाया है, इसमें भारतीय उदात्त चेतना का नव्य एवं भव्य रूप के साथ अवतरण हुआ है। रामायण में वर्णित कौटुम्बिक व्यवहार भारतीय समाज का आदर्श एवं आशावाद की भावना से समन्वित है। सभी पात्र आदर्श के प्रतीक एवं प्रेरक हैं। रामायण में राम एक आदर्शपुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र एवं आदर्श राजा के रूप में चित्रित हुए हैं। उनका आचार – विचार एवं व्यवहार सदा से अनुकरणीय रहा है। उनकी पितृभक्ति अद्भूत एवं प्रेरक है –

गुरुश्च राजा च पिता च वृद्धः

क्रोधात् प्रहर्षादथवापि कामात्।
यदि व्यादिशेत् कार्यमवेक्ष्य धर्मे,
कस्तं न कुर्यादनृशंसवृत्तिः।।

वा.रा., अयोध्याकाण्ड – 21/59

जाबालि के नास्तिक मत का खण्डन करते हुए तथा सनातनपथ का निदर्शन करते हुए वे कहते हैं –

सत्यं च धर्मं च पराक्रमं च
भूतानुकम्पां प्रियवादितां च।
द्विजातिदेवतातिथिपूजनं च,
पन्थानमाहुस्त्रिदिवस्य सन्तः।।

वा.रा., अयोध्याकाण्ड – 22/52

रामचन्द्रजी के आशावादी प्रवृत्ति का ही परिणाम है कि वन में निवास करते हुए भी वे वानरसेना को संगठित कर उनके बल पर रावण जैसे दुराचारी एवं शक्तिशाली राजा को परास्त करने में सफल हुए। परमात्मभक्ति एवं सख्यप्रेम का अत्यन्त ही सुन्दर वर्णन रामायण में हुआ है। लक्ष्मण एवं भरत का भ्रातृप्रेम एवं भ्रातृसेवाभाव अत्यन्त ही अद्भूत, प्रेरक एवं अनुकरणीय है। रामायण में सीता एक पतिव्रता नारी के रूप में चित्रित हुई है –

यस्त्वया सह स स्वर्गो निरयो यस्त्वया विना।
इति जानन् परां प्रीतिं गच्छ राम मया सह ।।

वा.रा., अयोध्याकाण्ड – 30/18

सुन्दरकाण्ड में वर्णित सीता के अन्वेषण का वृतान्त आशावाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। भगवती सीता के अन्वेषणार्थ हनुमान् रावण के अन्तःपुर में जाते हैं। अन्तःपुर के घर–घर में वे सीता को ढूँढते हैं तथा वहाँ उसे न पाकर द्विविधा में पड़ जाते हैं तथा अनेक प्रकार से तर्क – वितर्क करने लगते हैं। इधर – उधर भटकने के बाद भी जब भगवती सीता उन्हें नहीं मिलती है तो वे अत्यन्त दुःखी हो जाते हैं –

ततस्तदा बहुविधभावितात्मनः
कृतात्मनो जनकसुतां सुवर्त्मनः।
अपश्यतोऽभवदतिदुःखितं मनः
सचक्षुषः प्रविचरतो महात्मनः।।

वा.रा.,, सुन्दरकाण्ड 7/17

वे अन्वेषण करना नहीं छोड़ते हैं, उन्हें यह आशा रहती है कि सीता अवश्य ही मिलेगी। अन्त में अशोकवाटिका में भगवति सीता का उन्हें दर्शन होता है –

ततो मलिनसंवीतां राक्षसीभिः समावृताम्।।
उपवासकृशां दीनां निःश्वसतीं पुनः पुनः।
ददर्श शुक्लपक्षादौ चन्द्ररेखामिवामलाम्।।

वा.रा.,, सुन्दरकाण्ड – 15/18, 19

महाकवि कालिदास की रचनाओं में भी आशावाद का झलक मिलता है। 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व की उक्ति में आशावाद का अन्त्यन्त ही सुन्दर रूप दिखाई देता है –

भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी
दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य।
भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं

शान्ते करित्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्।।

अभिज्ञानशाकुन्तल – 4/20

आशावाद को आशा और विश्वास से परिभाषित किया जा सकता है।

'अभिज्ञानशाकुन्तल' के षष्ठ अंक में देवराज इन्द्र अपने सारथि मातलि को इस विश्वास के साथ राजा दुष्यन्त के पास भेजते हैं कि राजा दुष्यन्त अवश्य ही राक्षसों का विनाश करेंगे। मातलि इन्द्र का सन्देश सुनाते हुए राजा दुष्यन्त से निवेदन करता है –

सख्युस्ते स किल शतक्रतोरजय्य ,
स्तस्य त्वं रणशिरसि स्मृतो निहन्ता।
उच्छेत्तुं प्रभवति यन्न सप्तसप्ति –
स्तन्नैशं तिमिरमपाकरोति।।

अभिज्ञानशाकुन्तल – 6/30

राजा दुष्यन्त इन्द्र की आज्ञा को दृष्टिगत कर मन्त्री पिशुन को प्रत्यावर्त्तनकाल तक राज्यभार सौंपकर मातलि के साथ इन्द्र के रथ पर आरुढ़ होकर स्वर्ग के लिए प्रस्थान करता है तथा दानवों का विनाश करके देवराज इन्द्र की आशा पूरी करता हैं। 'कुमारसम्भव' महाकाव्य में भगवान् शिव को वर रूप में प्राप्त करने की आशा से पार्वती की तपस्या का वर्णन हैं, क्योकि पार्वती को विश्वास है कि शिव के सदृश श्रेष्ठ वर की प्राप्ति तपस्या के द्वारा ही सम्भव है –

इयेष सा कर्त्तुमबन्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः।।
अवाप्यते सा कथमन्यथा द्वयं तथाविधं प्रेम पतिश्च तादृशः।।

कुमारसम्भव – 5/2

अपने पिता की आज्ञा पाकर वह तपस्या करने हेतु हिमालय की एक ऐसी चोटी पर चली गयी, जहाँ अनेक मोर रहा करते थे। आगे चलकर जो चोटी गौरीशिखर के नाम से प्रसिद्ध हो गया–

अथानुरूपाभिनिवेशतोषिणा कृताभ्यनुज्ञा गुरुणा गरीयसा।
प्रज्ञासु पश्चात्प्रथितं तदाख्यया जगाम गौरीशिखरं शिखण्डीमत्।।

कुमारसम्भव – 5/7

पार्वती की परीक्षा लेने एवं तपस्या को भङ्ग करने हेतु भगवान् शिव वहाँ स्वयं ब्रह्मचारी का वेश धारण कर उपस्थित हो जाते हैं, उन्हे अनेक प्रकार से समझाते हैं –

कुले प्रसूतिः प्रथमस्य वेधसस्त्रिलोकसौन्दर्यमिदोदितं वपुः।
अमृग्यमैश्वर्यसुखं नवं वयस्तपःफलं स्यात्किमतः परं वद।।

कुमारसम्भव – 5/41

अनेक प्रकार से वे शिव की निन्दा भी करते हैं –

अथाह वर्णी विदितो महेश्वरस्तदर्थिनी त्वं पुनरेव वर्त्तये।
अमङ्गलाभ्यास रतिं विचिन्त्यं तं तदानुवृत्तिं न च कर्त्तुमुत्सहे।।
वधूदुकुलं कलहंसलक्षणं गजाजिनं शोणितविन्दुवर्षि च।
तदुष्कपुष्पप्रकरावकीर्णयोः परोऽपि को नाम तदानुमन्यते।।

कुमारसम्भव – 5/65, 68

शिव की निन्दा सुनकर भी पार्वती अपने प्रण पर अडिग रही, उसने अपनी सखि से कहलवाया कि मैं एक शब्द भी शिव के विरुद्ध सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ, जो बड़ो की निन्दा करता है केवल वही पाप का भागी नहीं होता बल्कि सुनने वाला भी पाप का भागीदार होता है। वह वहाँ से उठकर जाने के लिए तैयार हो जाती है तब शिवजी अपने ब्रह्मचारी वेश का परित्याग करते हुए कहते हैं –

अद्य प्रभृत्यवनताङ्गी ! तवास्मि दासः क्रीतस्तपोभिरिति वादिनी चन्द्रमौलौ।
अह्नाय सा नियमजं क्लममुत्ससर्ज क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते।।

कुमारसम्भव – 5/86

इस प्रकार पार्वती की तपस्या सफल होती है, इसमें पार्वती की आशावादिता दृष्टिगोचर होती है। 'रघुवंश' महाकाव्य में राजा दिलीप पुत्रप्राप्ति की आशा से कामधेनु की पुत्री नन्दिनी नामक गाय की सेवा करते हैं। सेवाकाल के अन्तम दिन में नन्दिनी उनकी परीक्षा लेती है, जिसमें वे सफल होते हैं। उनकी सेवा से प्रसन्न होकर नन्दिनी उन्हें वरदान देती है –

दुग्ध्वा पयः पत्रपुटे मदीयं पुत्रोपभुङ्क्ष्वेति तमादिदेश।
वत्सस्य होमार्थविधेश्च शेषमृषेरनुज्ञामधिगम्य मातः।।

रघुवंश – 2/65

नन्दिनी के वरदान व महर्षि वशिष्ठ के आशीर्वाद के फलस्वरूप राजा दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा आठों दिशाओं के तेज से परिपूर्ण प्रतापी गर्म को धारण करती है –

अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रिरिव द्यौः सुरसरिदिव तेजो वह्निनिष्ठ्यूतमेशम्।
नरपतिकुलभूत्यै गर्भमाधत्त राज्ञी गुरुभिरभिनिविष्टं लोकपालानुभावैः।।

रघुवंश – 2/75

'पूर्वमेध' में यक्ष मेघ के माध्यम से जब यक्षिणी के पास सन्देश भेजता है तो उनको यह आशङ्का होती है कि कहीं मेघ यह न कह दे कि इतना अधिक प्रेम करने वाली तुम्हारी पत्नी प्रियवियोग को कैसे सहन कर पायी होगी। उसका कहीं देहान्त न हो गया हो? इस आशङ्का के निवारण हेतु यक्ष मेघ को विश्वास दिलाता है कि हे मेघ ! यद्यपि तुम्हारी आशङ्का औचित्यपूर्ण है तथापि मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मेरी पत्नी यक्षिणी पुनर्मिलन की आशा से अवश्य ही जीवित होगी –

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी –
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यः पातिप्रणयिहृदयं विप्रयोगे रूणद्धि।।

पूर्वमेघ /10

इस आशा से यक्ष मेघ के माध्यम से सन्देश भेजता है कि मेरी पत्नी पुनर्मिलन की आशा से अवश्य ही जीवित होगी।

महाकवि भास प्रणीत 'स्वप्नवासदत्त' नाटक राजा उदयन की स्वप्नदर्शन की सौन्दर्यमयी घटना पर आधारित है, इसमें मन्त्री यौगन्धरायण का अद्भूत आशावाद दृष्टिगोचर होता है। इस नाटक का नायक राजा उदयन धीरललित नायक हैं, 'अपनी पत्नी वासवदत्ता से वे अत्यधिक प्रेम करते हैं, उसके प्रेम में वे इतने मग्न हो जाते है कि राज्यकार्य के प्रति उदासीन रहने लगते है। प्रतिक्रियात्मक परिणामस्वरूप उनके पड़ोसी राजा आरुणि उनके राज्य पर अधिकार जमा लेते हैं। उनके कुशलमन्त्री यौगन्धरायण उनके खोये हुए राज्य को प्राप्त कराने हेतु आद्यन्त प्रयत्नशील रहते हैं। पुष्पकभद्रादि ज्योतिषियों की भविष्यवाणी 'पद्मावती महाराज उदयन की पत्नी बनेगी' पर विश्वास करके वासवदत्ता की स्वीकृति से एक योजना बनाते हैं। उस योजना के तहत राजा उदयन के शिकार खेलने के लिए जाने पर उनके राजकीय पड़ाव लावाणक ग्राम में आग लगवाकर रानी वासवदता एवं मन्त्री यौगन्धरायण के जलकर मर जाने का अफवाह फैलाकर मगधराजपुत्री पद्मावती का राजा उदयन के साथ दूसरे विवाह की पृष्ठभूमि तैयार कर लेते हैं, जिससे महाराज दर्शक के सैन्यबल की सहायता से राजा उदयन के खोये हुए राज्य की पुनः प्राप्ति हो सके। मन्त्री यौगन्धरायण और वासवदत्ता वेश बदलकर मगध के एक तपोवन में पहुँच जाते हैं। मगधराजपुत्री पद्मावती भी उसी तपोवन में अपनी माता से मिलने राजकीय ठाट–बाट के साथ पहुँचती है। पद्मावती के तपोवन आगमन के काल में पद्मावती के सेवकों द्वारा तपोवनवासियों को मार्ग से हॅटाया जाता है। अवन्तिवेशधारिणी वासवदत्ता दुःखी एवं सशंकित होकर यौगन्धरायण से पूछती है कि क्या मुझे भी मार्ग से हटाया जाएगा? इसके प्रत्युत्तर में वासवदत्ता को सान्त्वना देते हुए यौगन्धरायण की उक्ति में अद्भूत आशावाद झलकता है –

पूर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासी –
च्छलाध्यं गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्त्तुः।
कालक्रमेण जगतः परिवर्त्तमाना

चक्रारपंक्तिखि गच्छति भाग्यपंक्तिः।।

स्वप्नवासवदत्त – 1/4

अपनी योजना के तहत मन्त्री यौगन्धरायण राजा उदयन का दूसरा विवाह मगधराजपुत्री पद्मावती के साथ करवाकर मगधराज दर्शक के सैन्यबल की सहायता से राजा उदयन के खोये हुए राज्य की प्राप्ति कराने में पूर्णतः सफल होते हैं।

'वेणीसंहार' नाटक के भीमसेन की उक्ति में जो आशा और विश्वास दिखाई देता है, वह अद्भूत हैं –

मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपात् –

दुःशासनस्य रुधिरं न पिवाम्युरस्तः।

सञ्चूर्णयामि गदया न सुयोधनोरु

सन्धिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन।।

वेणीसंहार – 1/15

वह द्रोपदी की खुली हुई चोटी को सँवारने की प्रतिज्ञा करता है तथा उसके लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है –

चञ्चद्भुजभ्रमितचण्डगदाभिघात –

सञ्चूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य।

स्त्यानावनद्धघनशेणितशोणपाणि –

रुतंसयिष्यति कचांस्तव देवि! भीमः।।

वेणीसंहार – 1 /21

अन्त में द्रोपदी की खुली हुई चोटी को सँवारकर वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करता है – भवति ! संयम्यताभिदानीं धार्त्तराष्ट्रकुलकालरात्रिदुःशासन विलुलितेयं वेणी'।

वेणीसंहार – 6/पृष्ठ – 378

'उत्तररामचरित' नाटक में सीता के विषय में फैले हुए लोकापवाद को सुनकर सूत्रधार के यह कहने पर कि यह किंवदन्ति यदि महाराज ने सुन लिया तो अनर्थ हो जाएगा; इसके प्रत्युत्तर में नट के द्वारा कथित उक्ति – 'सर्वथा ऋषयो देवाश्च श्रेयो विधास्यन्ति' में आशावाद झलकता है।

उत्तररामचरित – 1/पृष्ठ – 14

दुर्मुख के मुख से सीता के विषय में प्रजाजनों के मध्य फैले हुए लोकापवाद को सुनकर प्रजानुरञ्जन के लिए सीता का परित्याग करते हुए श्रीराम कहते हैं – 'भगवति वसुन्धरे ! सुश्लाध्यां दुहितरमवेक्षस्व जानकीम्'।

उत्तररामचरित – 1/पृष्ठ – 97.

चित्रदर्शन के प्रसङ्ग में भागीरथी को देखकर रामचन्द्रजी सीता के कल्याण की कामना के लिए प्रार्थना करते हुए कहते हैं – 'रघुकुलदेवते! नमस्ते ! सा त्वमम्ब ! स्नुषायामरुन्धतीव सीतायां शिवानुध्याना भव'।

उत्तररामचरित –1 /पृष्ठ – 50

इससे ज्ञात होता है कि सीता के वनवासकाल में सीता के रक्षा एवं सुरक्षा हेतु रामचन्द्रजी माता पृथ्वी एवं रघुकुलदेवी गंगा के प्रति आशान्वित हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि संस्कृत वाङ्मय सदा 'आशावाद' का प्रेरणास्रोत रहा है। आशावाद निराशावाद का विलोम है। आशावादी होने का अर्थ है जीवन में कभी उम्मीद नहीं छोड़ना, जीवन में आनेवाली समस्याओं, कठिनाईयों एवं चुनौतियों का सामना करने के लिए सदैव तत्पर रहना – 'निराशायाः समं न विद्यते मानवस्य किञ्चित पापम्' । आशावाद नये सपनों एवं उम्मीदों को जन्म देता है एवं कर्त्तव्य पथ पर सदैव अग्रसर होने के लिए शक्ति प्रदान करता है।